"बैराग"

- है कोई राम पिआरो गावै । सरब कलिआण सूख - सच पावै । रहाउ ।

अर्थः- हे भाई ! कोई विरला भाग्यशाली मनुष्य प्यारे के गुण गाता है, वह सारे सुख प्राप्त कर लेता है, सच्चे आनंद लेता है, सदा स्थिर परमात्मा को मिल पड़ता है । रहाउ ।

बन - बन खोजत फिरत बैरागी । विरले काहू एक लिव लागी । जिन हरि पाइआ से वडभागी । (5-203)

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा को मिलने के लिए जो कोई मनुष्य गृहस्थ से उपराम हो के जंगल - जंगल ढूँढता फिरता है तो इस तरह परमात्मा नहीं मिलता । किसी विरले मनुष्य की एक परमात्मा के साथ लगन लगती है । जिस जिस मनुष्य ने प्रभु को ढूँढ लिया है, वे सभी बड़े भाग्यशाली हैं ।

• तिचर वसह सुहेलड़ी - जिचर साथी नाल । जा साथी उठी चलिआ - ता धन खाक राल ।

अर्थः- हे काया ! तू उतना समय ही सुखी बसेगी, जितना समय जीवात्मा तेरा साथी तेरे साथ है । जब तेरा साथी जीवात्मा उठ के चल पड़ेगा, तब, हे काया ! तू मिट्टी में मिल जाएगी ।

मन बैराग भइआ - दरसन देखणे का चाउ । धन सु तेरा थान । रहाउ ।

अर्थः- हे हरि ! वह शरीर भाग्यशाली है जिसमें तेरा निवास है जहां तुझे याद किया जा रहा है । वह मनुष्य भाग्यवान है जिसके मन में तेरा प्यार पैदा हो गया है । जिसके मन में तेरे दर्शन की तड़प पैदा हुई है । रहाउ

जिचर वसिआ कंत घर जीउ - जीउ सभ कहात । जा उठी चलसी कंतड़ा - ता कोइ न पुछै तेरी वात ।

अर्थः- हे काया ! जितने समय तेरा पति जीवात्मा तेरे घर में बसता है, सभी लोग तुम्हें 'जी' 'जी' करते हैं सारे तेरा आदर करते हैं । पर जब निमाणी कंत जीवात्मा उठ के चल पड़ेगा, तब कोई भी तेरी बात नहीं पूछता ।

पेईअड़े सहु सेव तूं - साहुरड़े सुख वस । गुर मिल चज अचार सिख - तुध कदे न लगे दुख ।

अर्थः- हे जीवात्मा जब तक तू, पेके घर में संसार में है, तब तक पति प्रभु को सिमरती रह । ससुराल में परलोक में जाकर तू सुखी बसेगी । हे जीवात्मा ! गुरु को मिल के जीवन विधि सीख, अच्छा आचरण बनाना सीख, तुझे कभी कोई दुख नहीं व्यापेगा ।

सभना साहुरै वंजणा - सभ मुकलावणहार । नानक धन सोहागणी जिन सह नाल पिआर । (5-50-51)

अर्थः- पर सभी जीव - स्त्रीयों ने ससुराल परलोक में अपनी अपनी बारी से चले जाना है, सभी ने मुकलावे जाना है । हे नानक ! वह जीवस्त्री सुहाग - भाग वाली है जिनका पति प्रभु से प्यार बन गया है ।

- नानक नाम निधान है - गुरमुख पाइआ जाइ । मनमुख घर होदी वथ न जाणनी अंधे-भउक-मुए बिललाइ ।

अर्थः- हे नानक ! नाम ही असल खजाना है, जो सतिगुरु के सन्मुख हो के मिल सकता है अंधे मनमुख हृदय - रूप घर में होती इस वस्तु को नहीं पहचानते, और बाहर माया के पीछे बिलकते और भौंकते मर जाते हैं ।

कंचन काइआ निरमली - जो सच नाम सच लागी । निरमल जोत निरंजन पाइआ गुरमुख भ्रम भउ भागी । नानक गुरमुख सदा सुख पावह अनदिन हर बैरागी ।

अर्थः- जो शरीर सच्चे नाम के द्वारा सच्चे प्रभु में जुड़ा हुआ है, वह सोने जैसा शुद्ध है उसको निर्मल ज्योति रूपी माया से रहित प्रभु मिल

जाता है और सतिगुरु के सन्मुख हो के उसका भ्रम और डर दूर हो जाता है हे नानक ! सतिगुरु के सन्मुख मनुष्य हर वक्त परमात्मा के वैरागी हो के सदा सुख पाते हैं ।

से गुरसिख धन धन है जिनी गुर उपदेस सुणिआ हर कंनी ।
गुर सतिगुर नाम दिड़ाइआ तिन हंउमै दुविधा भंनी ।

अर्थः- धन्य हैं वे गुरसिख जिन्होंने सतिगुरु का उपदेश ध्यान से सुना है सतिगुरु ने जिसके भी हृदय में नाम दृढ़ किया है उसने अहंकार और दुविधा हृदय में से तोड़ डाली है ।

विन हर नावे को मित्र नाही वीचार डिठा हर जंनी । जिना गुरसिखा कउ हर संतुसट है तिनी सतिगुर की गल मंनी ।

अर्थः- प्रभु का स्मरण करने वाले गुरसिखों ने ये बात विचार के देख ली है कि परमात्मा के नाम के बिना कोई सच्चा मित्र नहीं है जिस गुरसिखों पर प्रभु प्रसन्न होता है, वह सतिगुरु की शिक्षा पे चलते हैं ।

जो गुरमुख नाम धिआइदे तिनी चड़ी चवगण वंनी ।
(3-590-591)

अर्थः- जो मनुष्य सतिगुरु के सन्मुख हो के नाम जपते हैं, उनको प्रेम की चौगुनी रंगत चढ़ती है ।

• साचे सबद सहज धुन उपजै - मन साचे लिव लाई । अगम अगोचर नाम निरंजन - गुरमुख मंन वसाई ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य सदा - स्थिर प्रभु की महिमा के शब्द में जुड़ के अपने मन में सदा - स्थिर प्रभु में तवज्जो जोड़े रखता है, उसके अंदर आत्मिक अडोलता की लहर पैदा हो जाती है । हे भाई ! गुरु के सन्मुख

रहने वाला मनुष्य ही अगम्य पहुँच से परे अगोचर और निर्लिप प्रभु का नाम अपने मन में बसाता है ।

एकस महि सभ जगतो वरते - विरला एक पछाणे । सबद मरै ता सभ किछ सूझै - अनदिन एको जाणे ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु के सन्मुख रहने वाला ही कोई विरला मनुष्य एक परमात्मा के साथ सांझ डालता है और समझ लेता है कि सारा संसार एक परमात्मा के हुक्म में ही काम कर रहा है । जब कोई मनुष्य गुरु के शब्द के माध्यम से अपने अंदर से आपा - भाव दूर करता है, तब उसको ये सारी सूझ आ जाती है, तब वह हर वक्त सिर्फ परमात्मा के साथ ही गहरी सांझ डाले रखता है ।

जिस नो नदर करे सोई जन बूझै - होर कहणा कथन न जाई । नानक नाम रते सदा बैरागी - एक सबद लिव लाई ।

(3-1234)

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा मेहर की निगाह करता है, वही जीवन का सही रास्ता समझता है प्रभु की मेहर के बिना कोई और रास्ता बताया नहीं जा सकत। हे नानक ! हरि की कृपा से ही प्रभु की महिमा वाले गुरु - शब्द में तवज्जो जोड़ के हरि - नाम में मगन रहने वाले मनुष्य दुनिया के मोह से सदा निर्लिप रहते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"